



बकरियों के मेमनों का वैज्ञानिक प्रबंधन

चन्दा सिंह¹ और प्रतीक्षा पांडा²

भारतीय अर्थव्यवस्था में बकरी पालन एक महत्वपूर्ण कृषि आधारित उद्यम है, जो विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, आय एवं पोषण सुरक्षा का सशक्त माध्यम है। इस व्यवसाय की सफलता काफी हद तक मेमनों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर निर्भर करती है, क्योंकि यही आगे चलकर उत्पादक पशु बनते हैं। जन्म के समय मेमने अत्यंत संवेदनशील होते हैं और उन्हें विशेष देखभाल, संतुलित पोषण तथा स्वच्छ वातावरण की आवश्यकता होती है। उचित प्रबंधन के अभाव में नवजात मेमनों की मृत्यु दर 30-40 प्रतिशत तक हो सकती है, जिससे पशुपालकों को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। मेमनों का वैज्ञानिक पालन-पोषण उनकी स्वस्थ वृद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं भविष्य की उत्पादकता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जन्म के तुरंत बाद उचित पोषण, समय पर स्वास्थ्य देखभाल तथा अनुकूल प्रबंधन अपनाने से उनकी जीवित रहने की क्षमता बढ़ती है, विकास बेहतर होता है तथा पोषण संबंधी समस्याओं से बचाव होता है। इस प्रकार वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर न केवल मेमनों की मृत्यु दर कम की जा सकती है, बल्कि बकरी पालन की उत्पादकता एवं लाभप्रदता में भी काफी वृद्धि की जा सकती है।

नवजात मेमनों का प्रारंभिक प्रबंधन उनके जीवित रहने एवं स्वस्थ विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जन्म के तुरंत बाद मेमने की नाक एवं मुंह को अच्छी

¹एम.वी.एस.सी. छात्रा; ²सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा-281001

तरह साफ करें, ताकि श्वसन मार्ग अवरुद्ध न हो। शरीर पर लगी झिल्ली को सूती कपड़े से रगड़कर हटाने से शरीर शीघ्र सूखता है तथा रक्त संचार सामान्य होता है। आवश्यकता होने पर मेमने को कुछ सेकंड के लिए पिछले पैरों से पकड़कर सिर नीचे की ओर रखा जा सकता है। इससे श्वास नली में मौजूद तरल पदार्थ बाहर निकल जाता है। सामान्यतः स्वस्थ मेमना जन्म के

लगभग आधे घंटे के भीतर खड़ा होकर चलना प्रारंभ कर देता है।

गर्भनाल की उचित देखभाल संक्रमण से बचाव के लिए आवश्यक है। इसके लिए गर्भनाल के सिरे को टिंचर आयोडीन में डुबोएं तथा 12 घंटे बाद यह प्रक्रिया पुनः दोहराएं। नवजात मेमनों एवं उनकी माताओं के लिए स्वच्छ, सूखा एवं सुरक्षित स्थान उपलब्ध करवाना चाहिए। जन्म के बाद के पहले दो महीने अत्यंत संवेदनशील होते हैं, इसलिए इस अवधि में विशेष निगरानी एवं देखभाल आवश्यक है।

कोलोस्ट्रम एवं आहार प्रबंधन

जन्म के 30 मिनट के भीतर मेमने को कोलोस्ट्रम (खीस) अवश्य देना चाहिए। यह मां का पहला दूध होता है, जिसमें प्रचुर मात्रा में एंटीबॉडी होती है, जो मेमने को प्रारंभिक संक्रमणों से बचाकर उसकी प्रतिरक्षा क्षमता विकसित करती है। यदि मेमना स्वयं दूध न पी सके, तो उसे धीरे-धीरे दूध पिलाना चाहिए। पहले तीन दिनों तक लगभग 300 मि.ली. कोलोस्ट्रम दिन में तीन बार देना चाहिए।

चौथे दिन से दो सप्ताह की आयु तक लगभग 350 मि.ली. दूध दिन में तीन बार पिलाना चाहिए। 15 दिनों की आयु से ठोस आहार एवं हरा चारा थोड़ी-थोड़ी मात्रा में देना प्रारंभ करें, ताकि मेमनों का पाचन तंत्र ठोस आहार के अनुकूल हो सके। एक से तीन महीने की आयु तक प्रतिदिन 50-100 ग्राम ठोस आहार दें, जिसमें लगभग 22 प्रतिशत प्रोटीन होना चाहिए। संतुलित पोषण मेमनों की तीव्र वृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य एवं भविष्य की उत्पादकता के लिए आवश्यक है।

पोषण प्रबंधन एवं वृद्धि

मेमनों की आयु बढ़ने के साथ उनके आहार में क्रमिक परिवर्तन करना आवश्यक है, जिससे जुगाली करने वाले अंगों का समुचित विकास हो सके। संतुलित आहार में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन एवं खनिजों का उचित अनुपात होना चाहिए। प्रारंभिक सप्ताहों में शुष्क आहार का सेवन शरीर भार का लगभग 15-20 प्रतिशत, कूड प्रोटीन 18-20 प्रतिशत तथा कुल पाच्य पोषक तत्व 75-80 प्रतिशत होना चाहिए। साथ ही, कैल्शियम एवं फॉस्फोरस की पर्याप्त मात्रा भी आवश्यक है।

तीन से आठ सप्ताह की आयु में आहार में 16-18 प्रतिशत तथा 9 से 12 सप्ताह की

सारणी 1. मेमनों हेतु ठोस आहार का मिश्रण

घटक	मात्रा (प्रतिशत)
मक्का	40
मूंगफली की खली	30
गेहूं का चोकर	10
तेल रहित चावल का चोकर	13
गुड़	5
खनिज मिश्रण	2
नमक, विटामिन ए, बी ₂ , डी ₃ एवं एंटीबायोटिक सप्लीमेंट	1

यह संतुलित ठोस आहार मेमनों की तीव्र वृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य एवं प्रारंभिक विकास के लिए उपयुक्त रहता है।

आयु में 14-16 प्रतिशत प्रोटीन पर्याप्त रहता है। मेमनों को हर समय स्वच्छ एवं ताजा पेयजल उपलब्ध करवाना चाहिए, क्योंकि यह पाचन, शरीर में द्रव संतुलन तथा समुचित वृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

स्वास्थ्य देखभाल एवं रोग प्रतिरोध

मेमनों के स्वस्थ विकास एवं रोगों की रोकथाम के लिए नियमित स्वास्थ्य प्रबंधन आवश्यक है। समय पर टीकाकरण एवं कृमिनाशन अपनाने से उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा मृत्यु दर में कमी आती है।

प्रभावित क्षेत्रों में बिसहरिया (एंथ्रेक्स) एवं रक्तस्रावी सेप्टिसीमिया का टीका छह

सारणी 2. जन्म से 90 दिनों तक मेमनों का आहार प्रबंधन

मेमनों की आयु	दूध (मि.ली.)	ठोस आहार (ग्राम)	हरा चारा
1-3 दिन	कोलोस्ट्रम 300 (दिन में 3 बार)	-	-
4-14 दिन	350 (दिन में 3 बार)	-	-
15-30 दिन	350 (दिन में 3 बार)	थोड़ी मात्रा में	थोड़ी मात्रा में
31-60 दिन	400 (दिन में 2 बार)	100-150	इच्छानुसार
61-90 दिन	200 (दिन में 2 बार)	200-250	इच्छानुसार

सारणी 3. मेमनों में टीकाकरण की अनुसूची

रोग	प्रथम टीकाकरण	पुनः टीकाकरण
बिसहरिया (एंथ्रेक्स)	6 माह की आयु में	प्रभावित क्षेत्रों में वर्ष में एक बार
रक्तस्रावी सेप्टिसीमिया	6 माह की आयु में	प्रतिवर्ष बरसात से पहले
आंत विषाक्तता (एंटेरोटॉक्सिमिया)	4 माह की आयु में (यदि माता का टीकाकरण हुआ हो) प्रथम सप्ताह में (यदि माता का टीकाकरण न हुआ हो)	प्रतिवर्ष बरसात से पहले (मई में) 15 दिनों बाद बूस्टर डोज
पीपीआर	3 माह की आयु में	प्रत्येक 3 वर्ष में एक बार
खुरपका-मुंहपका (एफएमडी)	4 माह की आयु में	वर्ष में दो बार (मार्च एवं सितंबर)
चेचक	3 माह या अधिक आयु में	प्रतिवर्ष (दिसंबर माह)

दूध छुड़ाने का प्रबंधन

दूध छुड़ाना मेमनों को दूध आधारित आहार से ठोस आहार पर लाने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह कार्य धीरे-धीरे करना चाहिए, ताकि मेमने बिना तनाव के नए आहार के अनुकूल हो सकें। इसके लिए दूध की मात्रा क्रमशः कम करते हुए ठोस आहार की मात्रा बढ़ानी चाहिए। इस अवधि में उच्च गुणवत्ता वाला, संतुलित एवं सुपाच्य ठोस आहार देना आवश्यक है, जिससे उनकी पोषण संबंधी आवश्यकताएं पूरी होती रहें। दूध छुड़ाने के दौरान मेमनों के आहार सेवन, शरीर भार एवं स्वास्थ्य की नियमित निगरानी करनी चाहिए। उचित प्रबंधन से मेमने शीघ्र ही ठोस आहार के अभ्यस्त हो जाते हैं, उनका विकास प्रभावित नहीं होता तथा तनाव कम होने के साथ उनकी वृद्धि एवं भविष्य की उत्पादकता बेहतर बनी रहती है।



माह की आयु में लगाकर प्रतिवर्ष दोहराना चाहिए। आंत विषाक्तता (एंटेरोटॉक्सिमिया) का टीका, यदि गर्भावस्था के दौरान मादा बकरी का टीकाकरण न हुआ हो, तो मेमने को प्रथम सप्ताह में तथा अन्यथा चार माह की आयु में लगाना चाहिए।

पीपीआर (पेस्टे डेस पेटिट्स रुमिनेंट्स) का टीका तीन माह की आयु में लगाकर प्रत्येक तीन वर्ष में दोहराना चाहिए। खुरपका-मुंहपका रोग का टीका चार माह की आयु में लगाकर

वर्ष में दो बार (मार्च एवं सितंबर) तथा बकरी चेचक का टीका तीन माह या उससे अधिक आयु के मेमनों को प्रतिवर्ष दिसंबर में लगाना चाहिए।

नियमित कृमिनाशन भी स्वास्थ्य प्रबंधन का महत्वपूर्ण भाग है। पहला कृमिनाशन दो से चार सप्ताह की आयु में करें तथा इसके बाद प्रत्येक चार से छह सप्ताह के अंतराल पर कम से कम 18 सप्ताह की आयु तक कुल 5 बार कृमिनाशन करवाना चाहिए। इससे आंतरिक परजीवियों का प्रभाव कम होता है तथा मेमनों की वृद्धि एवं स्वास्थ्य बेहतर बना रहता है।

इस प्रकार बकरी पालन में मेमनों का वैज्ञानिक प्रबंधन व्यवसाय की सफलता का महत्वपूर्ण आधार है। जन्म से ही उचित देखभाल, समय पर कोलोस्ट्रम पिलाना, संतुलित पोषण, स्वच्छ एवं सुरक्षित आवास, वैज्ञानिक ढंग से दूध छुड़ाना तथा नियमित टीकाकरण एवं कृमिनाशन अपनाने से मेमनों की मृत्यु दर में कमी आती है तथा उनकी वृद्धि एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है।

इससे भविष्य में स्वस्थ एवं अधिक उत्पादक पशु तैयार होते हैं, जिससे बकरी पालन की उत्पादकता और लाभप्रदता दोनों बढ़ती हैं। अतः मेमनों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रबंधन अपनाकर पशुपालक अपने उद्यम को अधिक टिकाऊ, लाभकारी एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ बना सकते हैं।